International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(5): 82-84

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(5): 82-84
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-07-2022
Accepted: 04-08-2022

डॉ. कुशम लता
संस्कृत-विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कुशम लता
संस्कृत-विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' काव्य में 'वर्ण-व्यवस्था तथा संस्कार'

डॉ. कुशम लता

प्रस्तावना

भारतवर्ष में वर्ण-व्यवस्था का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। ''ऋग्वेद'' में वर्ण-व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। प्राचीन ग्रन्थों के अतिरिक्त मध्यकालीन ग्रन्थों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इस चतुर्वर्ण का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी वर्ण-व्यवस्था की चर्चा प्राप्त होती है। यह वर्ण-व्यवस्था गुण तथा कर्म के आधार पर निश्चित की गई है। कालान्तर में वर्णों को जन्म के आधार पर जाति कहा जाने लगा। भारतीय समाज में जन्म से मृत्यु पर्यन्त विविध संस्कारों का प्रचलन रहा है। कवि जयनारायण यात्री द्वारा वर्णित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में वर्णित वर्ण-व्यवस्था का वर्णन निम्न प्रकार से है -

वर्ण व्यवस्था

''ऋग्वेद के पुरुषयूक्त में समाज की एक जीवित शरीर के रूप में कल्पना की गई है तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को क्रमशः उस शरीर का मुख, भुजा, उरुभाग तथा चरण माना गया है।[1] ''मनुस्मृति'' भी इसी का प्रतिपादन करती है।[2] ब्राह्मण को यज्ञ-यागादिक का अनुष्ठान करने में निपुण होना चाहिए[3], क्षत्रिय को बलवान होना चाहिए[4], वैश्य को व्यापार द्वारा राष्ट्र की उन्नति में योग देने वाला होना चाहिए।[5] शूद्र श्रम का साक्षात् रूप है जिस पर राष्ट्र टिका हुआ है,[6] अतः उस वर्ण को सेवा धर्म से अनुप्राणित होना चाहिए। कवि जयनारायण यात्री ने 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' चम्पू काव्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का उल्लेख किया है।

ब्राह्मण

ब्राह्मण वर्ण वैदिक युग से ही सर्वोच्च माना जाता रहा है। यह वर्ण विराट पुरुष का मुख कहलाता है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' चम्पू काव्य में ब्राह्मण वर्णन को सम्मान प्राप्त है। राज्य के शुभ कार्य ब्राह्मणों द्वारा ही किए जाते थे और राजा उन्हें प्रभूत दान आदि से प्रसन्न करता था। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के पञ्चम परिच्छेद में इस वर्णन का उल्लेख किया गया है इसका उदाहरण इस प्रकार है -

> ततो राजा राजपुरोहित माहूया भिवाद्य मनोहरविष्टरे च संस्थाप्य प्राह-कुलगुरो! भवत्पादपद्मकृपया सुतः स्वजनुषा राजभवन मद्योतयता शोभयच्च। अनुकम्पया पत्रचांग मुद्घाट्य ब्रवीतु भवान् स कीदृग् बालको विद्यते? किमह मिदानीमेव तस्य विधुवदनं विलोकितुं शक्नोमि।[7]

अर्थात् जब राजा ने राजपुरोहित को बुलाकर प्रणाम करके सुन्दर आसन पर बैठाकर कहा - हे कुलगुरु आपके चरण कमलों की कृपा से पुत्र ने अपने जन्म से राजभवन को प्रकाशित कर दिया और शोभायमान कर दिया। कृपा करके पत्रचांग खोलकर आप बतलाएँ कि वह बालक कैसा है? क्या मैं अभी उसका मुख रूपी चन्द्रमा देख सकता हूँ।

क्षत्रिय

ब्राह्मण वर्ण के पश्चात् द्वितीय स्थान क्षत्रिय वर्ण का आता है। प्राचीनकाल से ही देश और समाज की रक्षा का भार क्षत्रियों पर रहा है। शस्त्र धारण करना, देश पर निष्पक्ष शासन करना और वर्णाश्रम धर्म की रक्षा करना क्षत्रियों का विशेष कर्त्तव्य है।

''भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः'' के कुछ स्थल दर्शनीय हैं -

> भूपसारो न सारोऽस्ति, वास्तविकं चमूबलम्।
> सेनासुरक्षितो राजा न स स्वबलरक्षितः।।[8]

अर्थात् राजा का अपना बल, बल नहीं होता, असली बल तो सेना का बल होता है। राजा सेना से सुरक्षित होता है, वह अपने बल से सुरक्षित नहीं होता।

वैश्य

व्यावसायिक और कृषि कर्म का कार्य वैश्य वर्ण के द्वारा किया जाता था। देश और समाज की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ रखना उनका कर्त्तव्य था। पशुओं की रक्षा, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, ब्याज लेना, दान देना तथा कृषि-कार्य करना वैश्य वर्ण के कर्म कहे है।[9] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में वैश्य-वर्ण के वर्णित कर्म उल्लेखनीय है -

> कृषिकान् निजधान्यानि कृन्ततो वीक्ष्य गुरु श्छात्रानाह-भो वटवो! धान्यानि पक्वानि भूतानि। कृषीवलाः कृन्तन्ति। यूयमपि स्वधान्यानि कृन्तत। तदा सर्वे छात्रा दात्राण्यादाय धान्यानि कर्तितुं क्षेत्रं सिषिधुः। शान्तनु रपि तैः सह प्रयातुं तत्परोऽभूत्। धान्यानि कृन्तत स्तस्य पाणी सव्रणौ बभूवतुः। परन्तु स कमपि नादर्शयत् न चाकथयत्।[10]

अर्थात् किसानों को अपने धान काटते हुओं को देखकर गुरु ने छात्रों को कहा - हे छात्रों! धान पक गए है। किसान काट रहे है। तुम भी अपने धान काट लो। तब सभी छात्र दातियाँ लेकर धान काटने के लिए खेत में गए। शान्तनु भी उनके साथ जाने के लिए तैयार हो गया। धान काटते हुए उसके हाथ घाव वाले हो गए परन्तु उसने न किसी को दिखाए और न कहा।

शूद्र

सभी वर्णों में शूद्र का स्थान अन्तिम है। महत्त्व की दृष्टि से भी इनकी गणना, ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य के बाद होती है। मनुस्मृति में शूद्र का एकमात्र कर्त्तव्य ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों की सेवा बताया गया है।[11] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में शूद्र वर्णन के कार्यों का उल्लेख द्रष्टव्य है -

> त समागतं वीक्ष्य कृतकराञ्जलि र्विनीतशीर्षा परिचारिका प्रणम्य प्राह - भूरिभूरि वर्धापनं भवतु भर्त्तः। अननेनैव स सुधी रजानीत यद् महिषी गर्भवती जाता। तदा स
> प्रचुरप्रमदसिन्धौ निमग्नः स्वकण्ठाद् रत्नावलि मुत्तार्य तस्यै परिचारिकायै ददौ।[12]

अर्थात् उसको आया देखकर हाथ जोड़कर झुके सिर से सेविका ने प्रणाम करके कहा - हे स्वामी बहुत-बहुत बधाई हो। वह बुद्धिमान राजा इससे ही जान गया कि रानी गर्भवती हो गई है। तब बहुत आनन्द के समुद्र में डूबे हुए राजा ने अपने गले से रत्नावली (माला) उतार कर उस दासी को दे दी।

संस्कार

भारतीय समाज में जन्म से मृत्यु पर्यन्त विविध संस्कारों का प्रचलन रहा है। शास्त्रों में संस्कारों की महत्ता को दर्शाते हुए कहा गया है कि जन्म से सभी शूद्र होते हैं, संस्कार से द्विजत्व प्राप्त होता है।[13] भारतीय शास्त्रकारों ने सोलह संस्कार कहे हैं - गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, विद्यारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि संस्कार।[14] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में कुछ संस्कारों का वर्णन किया गया है, जिन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है -

गर्भाधान

शिशु का माता के गर्भ में बीजरूप में प्रतिष्ठित होना गर्भाधान है इस चम्पू में गर्भाधान संस्कार का वर्णन इस प्रकार से है -
यथा -

> पतिव्रतानां ध्रुरि कीर्तनीया, पतिप्रसंगेन निशा निनाय। काले मनोज्ञे मुनिनारदोक्ते
> गर्भंदधौ खं महिषी यथेन्दुम्।।[15]

अर्थात् पतिव्रताओं में आगे कहे जाने योग्य रानी ने पति के साथ रातें बिताईं। मुनि नारद के कहे हुए सुन्दर समय पर गर्भधारण किया। जैसे आकाश ने चन्द्रमा को धारण किया।

पुंसवन

गर्भ में स्थित शिशु को पुत्र रूप देने के लिए यह संस्कार किया जाता है। यह संस्कार द्वितीय माह से षष्ट माह की गर्भ धारिणी स्त्रियों के लिए होता है। प्रथम गर्भिणी स्त्री के लिए तीन माह तथा अन्य गर्भवती स्त्रियों के लिए चाह, छह अथवा आठ माह में यह संस्कार होता है

> 'पुमान् नरः सूयतेऽनेन तत् पुंसवन्'[16]

अर्थात् पुत्र प्राप्ति के इच्छुक जन ही इस पुंसवन संस्कार को सम्पादित करते हैं।
'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में पुंसवन संस्कार से सम्बन्धित कुछ बातें कही गई हैं। इस चम्पू में गर्भवती स्त्री को अपने गर्भ की रक्षा को लिए कुछ बातें बताई गई हैं -
यथा

> ततः सा चतुरिका स्वकथन मारेभे। मसृणक्षौमचिकुरे! स्वकुन्तलेषु बलेन तेल मर्दनं मा करोतु भवती। अनेन बालको बिरलस्वल्पशिरोरुहवान् खल्वाटो वा भवति। कुरंगशावकनयनि! स्वजलजत्रायतलोचने अंजनेन प्रभूतं मा रजतु। अनेन बालको नेत्र विकारी वा मार्जारीक्षणो विजायते।[17]

जातकर्म

इस संस्कार का अनुष्ठान शिशु जन्म के अवसर पर होता है।[18] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में राजा प्रतीपक अपने पुत्र शान्तनु के जन्म पर उसका जातकर्म संस्कार करते हैं। वह राजपुरोहित को बुलाकर प्रणाम करके सुन्दर आसन पर बैठाकर कहते हैं - कृपा करके पञ्चांग खोलकर आप बतालाएँ कि यह बालक कैसा है? तब वह श्रेष्ठ ब्राह्मण पञ्चांग को देखकर बोला - राजन्! यह लड़का कर्क लग्न में शतभिषा नक्षत्र के दूसरे चरण में पैदा हुआ है।[19] इस प्रकार स्पष्ट है कि शिशु के शुभ नक्षत्र में पैदा होना शुभ माना जाता था। इसीलिए यह संस्कार किया जाता था।

नामकरण

सामाजिक व्यवहार के लिए नाम एक प्राथमिक उपकरण है। मान्यता रही है कि मानव की प्रकृति पर नाम का सर्वाधिक प्रभाव रहता है। वह भाग्य का मूल भी है, इसीलिए नामकरण के अवसर पर उत्सव मनाना प्रशंसनीय कार्य समझा जाता है। बच्चों का नामकरण भी पहले ज्योतिषियों के द्वारा किया जाता था। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में इस नामकरण संस्कार के उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

> धर्मज्ञ! तनयोऽयं कर्कलग्ने शतभिषानक्षत्रस्य द्वितीयस्मिन् पादे जनि मगृह्णात्। अतोऽस्याभि धांन (सा) अक्षरे वर्तिष्यते। लग्ने बृहस्पति रस्ति। अतः शान्तिप्रियो भविता। अतोऽस्य नामधेयं ''शान्तनु'' इद मस्तु।[20]

विद्यारम्भ

विद्यारम्भ में शिष्य जब गुरु के पास विद्या-प्राप्ति के लिए जाता था तो उस समय यह संस्कार सम्पन्न किया जाता था। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में इस संस्कार का वर्णन इस प्रकार से है -
यथा

> बालकोऽयं शान्तनु र्विद्याध्ययन योग्य वयः प्राप्तवान्।
> अतोऽयं गुरुकुलं प्रेषणीयोऽस्ति।
> श्वोऽहर्मुखेऽमुं स्वर्णिमशतांगे समुपवेश्य गुरुकुलं नयतु भवान्।
> पुनश्च गुरवे प्रदातुं भूयिष्ठं हिरण्यं वसनान्यपि नयतु।[21]

अर्थात् यह बालक शान्तनु विद्या पढ़ने की आयु को प्राप्त हो गया है। इसलिए इसको गुरुकुल में भेजना है। कल प्रातःकाल उसको सोने के रथ में बैठाकर गुरुकुल में ले जाओ। गुरु को देने के लिए बहुत-सा धन (सोना) और कपड़े भी ले जाना।

विवाह

विवाह समस्त संस्कारों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। व्यक्ति का गृहस्थाश्रम में प्रवेश विवाह संस्कार से ही होता है। प्राचीन काल में भी विवाह की अनुपम महत्ता थी। इसके बिना मनुष्य निस्तेज माना जाता था।[22] धर्मशास्त्रानुसार आठ प्रकार के विवाह माने गए हैं - ब्राह्म, देव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस तथा पैशाच।[23] इनमें से प्रथम चार ब्रह्मा, देव, आर्ष तथा प्राजापत्य ब्राह्मणों के लिए उपयुक्त थे।[24] शेष विवाह वैश्यों तथा शूद्रों के लिए थे।[25] विवाह के उद्देश्यों में वंशवृद्धि प्रधान था। कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के अष्टम परिच्छेद में गंगा और शान्तनु के विवाह का पूर्ण रूप से उल्लेख किया गया है। इसका उदाहरण इस प्रकार से है -

> तत्र स राजपुरोहित माहूयावोचत् परमपूजनीय गुरुदेव! तरुणी यं मम जाया जाता। अत आवयो र्विवाह संस्कारं करोतु भवान्। एतन्निशम्य राजपुरोधाः प्रमदपूर्णचित्तः शशंस क्षितिपते! प्रथमं तु नववधूप्राप्तये मम वर्धापन मुररीकरोतु भवान्। साम्प्रतमेव समीचीनं मुहुर्तं लग्नञ्च वीक्ष्य भवतोः पाणिपीडनं करोमि। इत्यभिधाय गणेशादिनवग्रहवेदिकां यज्ञवेदिकाञ्च रचयित्वा तावुभौ पुरः संस्थाप्य विनायकादिनवग्रहाणा मर्चनं मखं प्रज्वलित ज्वलनपरिक्रमाञ्च कारयित्वा तयो परिणयं चकार। तदा तौ भर्तृभार्याबन्धने बबन्धतुः।[25]

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में गंगा और शान्तनु के विवाह का वर्णन काफी विस्तारपूर्वक है।

निष्कर्ष

ऊपरलिखित विवरण से स्पष्ट है कि कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' काव्य में 'वर्ण-व्यवस्था तथा संस्कार' का बड़े ही सुंदर ढंग से वर्णन किया गया है। वर्णन व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र का वर्णन किया गया है। संस्कारों में गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, विद्यारम्भ और विवाह संस्कार का बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। अतः शोध-कर्त्री को पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध-कार्य अन्य अनुसंधानकर्त्ताओं को एतादृष विषय पर अनुसंधान करने हेतु प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ-सूची

1. ऋग्वेद, 10.90.12
2. मनुस्मृति, 1.12
3. शतपथ ब्राह्मण, 1.9.3.16
4. ऐतरेय ब्राह्मण, 8.16
5. वही, 8.26
6. शतपथ ब्राह्मण, 13.6.2.10
7. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, पञ्चम परिच्छेद, पृष्ठ, 94
8. वही, 7.8
9. मनुस्मृति, 1.90
10. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, षष्ठ परिच्छेद, पृष्ठ, 117-118
11. मनुस्मृति, 1.9
12. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, पञ्चम परिच्छेद, पृष्ठ, 86
13. महाभारत, वनपर्व, 180.34
14. तावच्छूद्रसमो ह्येष यावद् वेदे न जायते।
15. संस्कार प्रकाश, भाग-1, पृष्ठ, 168
16. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, 5.2
17. संस्कारप्रकाश, अध्याय-2
18. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, पञ्चम परिच्छेद, पृष्ठ, 88-89
19. तैत्तिरीय संहिता, 2.2.5, 3-4 शतपथ ब्राह्मण, 11.8.3.6
20. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, पञ्चम परिच्छेद, पृष्ठ, 94-95
21. वही, पृष्ठ, 94
22. वही, षष्ठ परिच्छेद, पृष्ठ, 105
23. विष्णुपुराण, 5.38
24. मनुस्मृति, 3.21, याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.58
25. बोधायन-धर्मसूत्र, 1.11.10
26. मनुस्मृति, 3.22
27. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, अष्टम परिच्छेद, पृष्ठ, 151